अध्यात्म-रामायण से

रामकथा

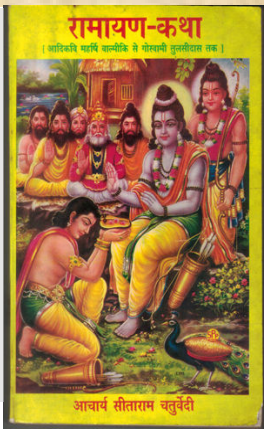

(अंक संख्या 99 से आगे)

आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

यह हमारा सौभाग्य रहा है कि देश के अप्रतिम विद्वान् आचार्य सीताराम चतुर्वेदी हमारे यहाँ अतिथिदेव के रूप में करीब ढाई वर्ष रहे और हमारे आग्रह पर उन्होंने समग्र वाल्मीकि रामायण का हिन्दी अनुवाद अपने जीवन के अन्तिम दशक (80 से 85 वर्ष की उम्र) में किया वे 88 वर्ष की आयु में दिवंगत हुए। उन्होंने अपने बहुत-सारे ग्रन्थ महावीर मन्दिर प्रकाशन को प्रकाशनार्थ सौंप गये। उनकी कालजयी कृति रामायण-कथा हमने उनके जीवन-काल में ही छापी थी। उसी ग्रन्थ से अध्यात्म-रामायण की कथा हम क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं।

- प्रधान सम्पादक

युद्धकी तैयारी

शुकके चले जानेपर रावणके नाना माल्यवानने वहा आकर रावणको बहुत समझाया कि तुम रामसे वैर छोड़कर उनके चरण-कमलका आश्रय जा लो। इसपर तो वह बिगड़ खड़ा हुआ और बोला कि वानरोंका सहारा लेने वाले जिस रामको उसके पिताने घरसे निकाल बाहर किया है वह भला मुझसे क्या खाकर पार पावेगा? जान पड़ता है तुम सठिया गए हो। तुम्हारी बुद्धिपर परदा पड़ गया है। यह कहकर रावण अपने मन्त्रियों के साथ अपने राजभवनके सर्वोच्च शिखरपर बैठकर वानर सैनिकोंको देखने लगा।

इतने में रामने एक अर्द्धचन्द्र बाण निकालकर ऐसा चलाया कि रावणके सारे श्वेत छत्र और दसों मुकुट नीचे कट गिरे। इससे वह इतना लज्जित हुआ कि तुरन्त अपने भवनमें जा घुसा और उसने प्रहस्त आदि राक्षसोंको युद्ध की तैयारीके लिये आज्ञा दे दी। आज्ञा पाते ही राक्षस लोग अस्त्र-शस्त्र लेकर लंकाके प्रत्येक द्वारपर जा डटे।

इधर वानर भी पर्वत-शिलाएँ और वृक्ष ले-लेकर लंकापर जा चढ़े और लकाके सव द्वार घेरकर राक्षसोंको मारने लगे! राक्षसों और वानरोंमें ऐसी घमासान लड़ाई छिड़ गई कि थोड़ी ही देर में राक्षसोंकी सेना एक चौथाई बची रह गई।

अपनी सेना नष्ट होते देखकर मेघनाद अन्तर्धान होकर आकाशमें चढ़कर वानरोंपर बाण बरसाने लगा। यह देखकर रामने कहा-मैं अभी एक क्षणमें इस दुष्टको ब्रह्मास्त्रसे भस्म किए डालता हूँ। यह सुनते ही मेघनाद तुरन्त वहाँसे भाग खड़ा हुआ।

लक्ष्मण-मूर्छा

वानर-सेनाको नष्ट हुआ देखकर रामने हनुमान्से कहा-तुम तुरन्त क्षीरसागरपर जाकर द्रोणाचल पर्वत उठा लाओ और उसकी दिव्य औषधियोंसे वानरोंको जीवित कर दो। सुनते ही हनुमान् वह पर्वत उठाते लाए और वानरोंको जीवित करके उसे फिर वहींका वहीं रख आए।

वानर-सेनाको जैसेका तैसा देखकर तो रावणको बड़ा विस्मय हुआ। उसने तत्काल अपने जिन बड़े-बड़े बलवान् योद्धाओंको युद्ध करने भेजा वे सबके सब राम, हनुमान, अंगद और लक्ष्मणके हाथोंसे मारे गए।

अपनी सेनाको नष्ट हुआ सुनकर तो रावण क्रोधसे तमतमा उठा और लंकाको रक्षाके लिये इन्द्रजित् को नियुक्त करके रामसे लड़नेके लिये निकल पड़ा। रणक्षेत्रमें पहुँते ही उसने अनेक वानर-सेनापतियोंको ढेर कर डाला। फिर सामने विभीषणको गदा लिए खड़ा देखकर रावणने उसपर अपनी बड़ी शक्ति उठा चलाई। किन्तु तत्काल लक्ष्मण अपना प्रचंड धनुष लेकर विभीषणके आगे आ खड़े हुए और वह शक्ति लक्ष्मणकी छाती में जा धंसी। शक्ति लगते ही लक्ष्मण मूच्छित होकर गिर पड़े। जब रावण उन्हें उठाने चला तो वे उसके लाख उठाए न उठ पाए। यह देखते ही हनुमानने लपककर उसकी छाती में ऐसा घंसा जमाया कि वह व्याकुल होकर रथके पिछले भागमें जा लेटा। हनुमान तत्काल लक्ष्मणको उठाकर रामके पास लेते आए। चेत होनेपर रावण अपने रथपर घनुष लिए रामकी ओर चल पड़ा। राम भी हनुमानके कंधेपर चढ़कर रावणकी ओर बढ़ चले। रावणने हनुमानपर तान-तानकर बड़े तीखे-तीखे बाण चलाए किन्तु हनुमानपर भला उनका क्या प्रभाव पड़नेवाला था ! इसी बीच रामने रावणके रथ, ध्वजा और सारथि सब काट गिराए और एक बाण रावणको ऐसा मारा कि वह मूच्छित होकर जा गिरा। तत्काल रामने उसका मुकुट काटकर कहा कि तुम मेरे बाणसे पीडित हो गए हो इसलिये जाओ, जाकर लंका में विश्राम करो।

रावण तो लंका में चला गया, इधर लक्ष्मणको देखकर राम शोकाकुल होकर हनुमानसे बोले कि तुम सब काम छोड़कर द्रोणाचलसे महौषधि लाकर लक्ष्मण और वानरोंको जीवित करो। जब हनुमान महासागर पार करके वायुवेगसे चले तब गुप्तचरोंसे यह समाचार सुनते ही रावण चिन्तित होकर कालनेमिके घर जा पहुँचा और उससे उसने सारी कथा कह सुनाई। सुनते ही कालनेमिने उससे कहा कि मैं आपका काम करूँगा तो अवश्य ही, पर जो दशा मारीचकी हुई वही मेरी भी होगी। इसलिये मेरा कहना मानो तो सब मोह छोड़कर रामको सीता और विभीषणको राज्य देकर तपोवनमें चले जाओ और सगुण भावसे नामरूप-रहित पुराण पुरुषका भजन किया करो।

कालनेमिके वचन सुनकर तो रावण झल्ला उठा और कहने लगा कि यदि तूने मेरी आज्ञाका उल्लंघन किया तो तुझे जीवित नहीं छोडूंगा, यह समझ ले। यह सुनकर हनुमानके मार्ग में विघ्न डालने के लिये कालनेमि चल पड़ा। उसने मुनि-वेश धारण करके शिष्योंके साथ तपोवन बनाकर आसन जा जमाया। हनुमानने वह आश्रम देखा तो विचार किया कि आश्रममें मुनीश्वरोंका दर्शन करके जल पी लूँ तब द्रोणाचलपर चलूँ। उस आश्रम में बैठा कालनेमि शिवकी पूजा कर रहा था। हनुमानने वहाँ जाकर जब उससे जल माँगा तब कालनेमिने कहा-'मेरे कमण्डलु में जल है, सामने फल है। खाओ और सोओ, जल्दी क्या है ? मैं तीनों कालों की बात जानता हूँ। रामके दर्शन मात्रसे लक्ष्मण और वानर उठ बैठे हैं।' हनुमानने कहा कि कमण्डलुके जलसे तो मेरी प्यास बुझनेवाली है नहीं। मुझे जलाशय दिखा दीजिए। कालनेमिने एक मायावी ब्रह्मचारीको आज्ञा दी कि जाओ, इन्हें जलाशय दिखा दो और हनुमानसे कहा कि तुम आँखें मूंदकर जल पीना और तुरन्त मेरे पास चले आना। मैं तुम्हें मन्त्रका उपदेश करूँगा। आँखे मूंदकर हनुमान ज्यों ही जल पीनेको झुके त्योंही एक मकरीने उन्हें मुंहसे जकड़ लिया, पर हनुमानने झटकैसे उसका मुख ही फाड़ डाला। वह दिव्य रूप धारण करके कहने लगी--एक मुनीश्वरके शापसे मैं धान्यमाली नामकी अप्सरा, मकरी हो गई थी। जिस पुरुष को आपने आश्रममें देखा है वह कालनेमि नामका राक्षस है जिसे रावणने आपके मार्ग में विघ्न डालने के लिये भेजा है। इसे मारकर आप द्रोणाचल चले जाइए। मैं ब्रह्मलोक चली जा रही हूँ।

हनुमानके लौटनेपर कालनेमिने कहा- लो, मन्त्र ग्रहण कर लो और गुरु-दक्षिणा दे दो ! हनुमानने मुट्ठी बाँधकर कहा- पहले गुरु-दक्षिणा ले लो। मन्त्र मिलता रहेगा। यह कहकर उन्होंने उसे ऐसा एक मुक्का जमाया कि उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

द्रोणाचलपर पहुँचकर जब वे औषधि नहीं पहचान पाए तो वे पूराका पूरा पर्वत ही उखाड़े लिए चले आए। रामने उस पर्वतसे ओषधि लेकर सुषेणसे लक्ष्मण की चिकित्सा कह कराई। लक्ष्मणके सचेत होनेपर विभीषण की सम्मतिसे सुग्रीव आदि फिर युद्धकी तैयारी करने लगे।

कुम्भकर्ण-वध

उधर रामके बाणोंसे घायल होकर रावण लंकामें जाकर सबसे कहने लगा कि ब्रह्माने मनुष्यके हाथसे मेरी मृत्यु बताई है किन्तु ससारमें मुझे तो ऐसा कोई मनुष्य दिखाई नहीं देता जो मुझे मार सके। अतः, जान पड़ता है नारायण ही मनुष्यके रूपमें राम होकर मुझे मारने चले आए हैं। राजा अनरण्यने भी मुझे शाप दिया था कि मेरे वंशमें भगवान् अवतार लेकर सकुटुम्ब तुम्हें मार डालेंगे। अतः, राम मुझे अवश्य ही मार डालेंगे। मेरा भाई कुम्भकर्ण सदा सोता रहता है। तुम लोग उसे मेरे पास जगा लाओ। वे सब राक्षस किसी-किसी प्रकार कुम्भकर्णको जगाकर रावणके पास लिवाते ले आए। रावणने उससे कहा कि रामने हमारे पुत्र-पौत्र और बान्धवोंको मार डाला है और मेरा भी मृत्युकाल आ पहुँचा है। अब बताओ, मुझे क्या करना चाहिए? कुम्भकर्णने हँसकर कहा - यह सब तुम्हारे पापका फल प्रकट हो रहा है। मैंने पहले ही तुमसे कहा था कि राम परब्रह्म हैं और सीता योगमाया हैं। एक दिन रातके समय नारद मुनिने मुझे बताया भी था कि भगवान् विष्णु रघुकुल में जन्म लेकर तुम्हें मारने आनेवाले हैं। इसलिये तुम रामको ब्रह्म समझो और वैर छोड़कर उनकी भक्ति करने लगो।

कुम्भकर्णके वचन सुनकर रावणकी भौंहें चढ़ गईं। वह कहने लगा कि मैंने ज्ञानोपदेश लेने के लिये तुम्हें नहीं बुलाया है। यदि तुम्हें अच्छा लगे तो जाकर युद्ध करो, नहीं तो जाओ, पड़कर सो रहो। कुम्भकर्ण तत्काल युद्धके लिये चल पड़ा और अपनी भुजाओंसे उठा-उठाकर लगा वानरोंको निगलने। आगे बढ़कर विभीषणने कुम्भकर्णको प्रणाम करके अपनी सारी आप -बीती आ सुनाई। कुम्भकर्णने विभीषणको गलेसे लगाकर कहा कि तुमने रामका आश्रय लेकर बड़ा अच्छा किया। अब तुम जाओ, मुझे अपनापराया कुछ नहीं सूझ रहा है। विभीषण उन्हें प्रणाम करके लौट आए और कुम्भकर्ण वहाँ सारी वानर-सेनाको रौंदता-मसलता घूमने लगा। यह देखकर तो रामने क्रुद्ध होकर उसका दाहिना हाथ काट डाला। तब वह बाएँ हाथ में साल का वृक्ष उठाकर राम की ओर दौड़ चला। रामने उसका वह बायाँ हाथ, दोनों पैर और फिर उसका सिर भी काटकर ऐसा फेंका कि सिर तो लंकाके द्वारपर जा पड़ा और उसका धड़ समुद्र में जा गिरा।

मेघनाद-वध

कुम्भकर्णकी मृत्यु सुनकर तो रावण मूच्छित हो गया। तब इन्द्रजित्ने रावणसे कहा कि आप चिन्ता क्या किए जा रहे हैं ? मैं अभी गुफामें जाकर निकुम्भिला देवीकी तृप्तिके लिये हवन किए आता हूँ।

विभीषणको यह समाचार मिला तो उन्होंने रामसे कहा कि यदि मेघनादका यह हवन निर्विघ्न समाप्त हो गया तो उसे कोई नहीं जीत पावेगा। आप लक्ष्मणको मेरे साथ भेज दीजिए। वे अवश्य मेघनादको मार डालेंगे। रामने कहा-'चलो, मैं ही उसे मारनेके लिये चला चलता हूँ।' इसपर विभीषणने कहा कि उस राक्षसको वही मार सकता है जिसने बारह वर्षतक निद्रा और आहार छोड़े रक्खा हो। लक्ष्मण भी जबसे आपके साथ आए हैं तभीसे न वे सोए, न उन्होंने कुछ भोजन किया। इसलिये लक्ष्मणको ही मेरे साथ चलने दीजिए।

हनुमान आदि यूथपति तथा सेनाके साथ लक्ष्मणने निकुम्भिलाके स्थानपर पहुँचकर मेघनादपर बाण बरसाने आरम्भ कर दिए। वानरों और राक्षसोंमें घमासान युद्ध छिड़ गया। अपनी सेनाको नष्ट होते देखकर इन्द्रजित् निम्भिलाका हवन छोड़कर बाहर निकल आया और आते ही लक्ष्मण और विभीषणको ललकारने लगा। जब लक्ष्मणने मेधनादके सारथि, घोड़े, रथ और धनुष सब काट डाले तब मेघनाद नये-नये धनुष लेकर लड़ने लग गया। इतने में रामका स्मरण करके लक्ष्मणने ऐसा बाण मारा कि इन्द्रजित्का मस्तक कटकर धरतीपर जा गिरा। सारी वानर-सेना जयजयकार कर उठी।

मेघनादकी मत्युका समाचार सुनकर यो रावण विलाप कर उठा और पुत्रशोकसे व्याकुल होकर वह सीताको मारने दौड़ चला। रावणको आते देखकर सीता तो भयभीत हो उठीं। उसी समय रावणके मन्त्री सुपार्श्वने रावणको आकर समझाया कि कुबेरके भाई और वेद-विद्याके पण्डित होकर आप स्त्री-वध क्यों किए डाल रहे हैं ? हम आपके साथ हैं। चलिए, चलकर राम-लक्ष्मणसे युद्ध ही क्यों न किया जाय।

अपने मन्त्रियोंसे विचार करके वह रामसे युद्ध करने निकल तो चला किन्तु रामके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल होकर वह तुरन्त लंकामें लौट गया। उसने शुक्राचार्य से जाकर कहा कि रामने सारी लंकापुरी नष्ट कर दी और सारे मेरे बन्धु-बान्धव मार डाले। शुक्राचार्य ने कहा- 'चिन्ता न करो। तुम एकान्त में बैठकर हवन कर डालो। यदि हवनमें विघ्न न हुआ तो अग्निमें से एक बहुत बड़ा रथ, घोड़े, धनुष्, तूणीर और बाण उत्पन्न होंगे, जिन्हें पाकर तुम अजेय हो जाओगे। मेरा दिया हुआ मन्त्र ग्रहण करके तत्काल हवन करने लगो। शुक्राचार्यसे मन्त्र लेकर रावणने अपने भवनके नीचे गुफा बनवाकर लंकाके सब द्वार बन्द करा दिए और हवन करने लगा।

हवनका धुआँ उठते देखकर विभीषण के कान खड़े हुए। उसने रामसे कहा कि यदि रावणका यह हवन निर्विघ्न पूर्ण हो गया तो उसे कोई नहीं मार पावेगा। रामने तत्काल उस के यज्ञमें विघ्न डालने के लिये सेनापति भेज दिए। करोड़ों वानरोंने लंकामें पहुँचकर रावणके द्वारपालों तथा घोड़ेहाथियोंको मसल डाला। प्रातःकाल होते ही विभीषणकी पत्नी सरमाने हाथके संकेतसे उन्हें हवनका स्थान बता दिया। झट अंगदने गुफाके द्वारपर रक्खे हुए पत्थरको अपने पैरकी ठोकरसे चूर-चूर कर डाला और सभी वानर उस कन्दरामें जा घुसे। वहां रावणको आँखें मूंदे बैठे देखकर वे वानर उसके सेवकोंको पीटने लगे, यज्ञ-सामग्री हवनकुण्डमें डालने लगे और कोलाहल करने लगे। हनुमान्ने तो रावणके हाथका जुआ ही छीनकर उसीसे उसे धुनना प्रारम्भ कर दिया। अन्य वानरगण उसे दाँतों और पंजोंसे मारते-काटते भी रहे पर वह टससे मस नहीं होकर दिया।

यह देखकर अंगदने झट मन्दोदरीकी चोटी पकड़कर उसे वहाँ ला पटका। मन्दोदरी भी रावणके सामने ही फफक-फफककर रोने लगी। मन्दोदरीका विलाप सूनकर रावणने ज्यों ही हाथमें खड़ग लेकर अगदपर प्रहार किया त्यों ही सारे वानर उसका यज्ञ विध्वंस करके वहाँसे चलते बने। रावणने मन्दोदरीको बहुत ढाढस बँधाया और कहा कि जब मैं लक्ष्मणसहित रामको मारकर आऊँ या मैं ही रामके हाथोंसे मरकर उनका पद प्राप्त कर लं तब तुम सीताको मारकर मेरे साथ सती हो जाना। मन्दोदरीने रावणको बहुत समझाया कि राम ही तो अनेक अवतार धारण करते रहे हैं। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। आप जानकीको रामके पास भेज दीजिए और विभीषणको राज्य देकर मेरे साथ वनको चले चलिए। रावण बोला- मैं जानता हूँ कि राम ही साक्षात् विष्णु हैं और सीता साक्षात् लक्ष्मी हैं। इसीलिये मैं सीताको हर ले आया हूँ कि रामके हाथसे मरकर परम पद प्राप्त कर लूँ।

मन्दोदरीको इस प्रकार समझा-बुझाकर वह रामसे युद्ध करनेके लिये चल पड़ा। रामको रथहीन देखकर इन्द्र ने अपने सारथि मातलिके साथ रथ, ऐन्द्र धनुष, अभेद्य कवच, खड्ग और दो दिव्य तूणीर भी रामके पास भेज दिए। उसपर आरूढ होकर रामने रावणके साथ ऐसा घमासान युद्ध छेड़ दिया जैसा आजतक न कभी हुआ, न होगा। राम अपने ऐन्द्रास्त्रसे रावणके जो-जो सिर काटते रहे वे फिर-फिर निकलते रहे। राम सोचने लगे कि एक सौ एक सिर काट देनेपर भी यह मर क्यों नहीं रहा है ? विभीषणने बताया कि ब्रह्माने इसको वर दिया है कि इसकी भुजाएँ और सिर बार-बार काट देनेपर भी नये नये उत्पन्न हो जायेंगे। अतः, आप इसकी नाभिके अमतको आग्नेयास्त्रसे सुखा डालिए, तभी इसकी मृत्यु हो पावेगी। यह सुनकर रामने तत्काल आग्नेयास्त्रसे उसकी नाभिको बेधकर उसके नौ सिर और अठारह भजाएँ काट डाली। इसपर रावणने क्रुद्ध होकर विभीषणको मारने के लिये जो भयानक शक्ति छोड़ी उसे रामने बीच में ही काट गिराया। अब रावण के वे वल एक सिर और दो भुजाएँ रह गई थीं। मातलिके कहनेसे रामने ब्रह्मास्त्रसे युक्त ऐसा मर्मघातक बाण रावणपर छोड़ा जो वज्र के समान रावणके वक्षस्थलमें जा लगा और उसका प्राणान्त हो गया। उसी क्षण रावणकी देहसे प्रकाशमान ज्योति निकलकर राम में प्रवेश कर गई।

(क्रमशः अगले अंक में)